टिप्पणी

.....श्री नवल किशोर ने मानवतावाद और साहित्य में जो विचारधारा अपनायी है वह प्रगतिवादी सांप्रदायिकता से मुक्त और जीवन एवं साहित्य के लिए कहीं अधिक प्रेरक और उपादेय है.....

नवलकिशोर के द्वारा मानववाद का जितना गहरा और प्रामाणिक अनुशीलन किया गया है, वह उनके गहरे चिंतन-मनन और सतत अध्ययन का प्रमाण है | समस्याओं के विवेचन-क्रम में अपने विवेक को उन्होंने निरंतर जागृत रखा है | 'टाइप' के रूप में ही मनुष्य को देखना उन्हें एकांकी लगता है क्योंकि वह व्यक्ति के रूप में भी महत्वपूर्ण है | नयेपन को परिभाषित करते हुए उनके द्वारा एक और अनुकरणात्मक या पिछलग्गूपन की अवमानना की गयी है तो दूसरी ओर फार्मूलाबद्ध रचना को हीन बताया गया है और उसकी अपेक्षा उन्मुक्त एवं जीवंत कृति को वरियता प्रदान की गयी है । फैशन और परिपाटी पूजन दोनों की तुलना में नयी जीवनदृष्टि से सम्पन्न रचना को विशेष महत्वपूर्ण समझा गया है । आलोचना से पूर्व कृति के गुणों से आलोचक का स्वयं आश्वस्त हो जाना इसके लिए नितान्त आवश्यक है । उनके अनुसार 'लेखन एक सचेत कर्म है, अतः प्रयोग भाषायी व्यवस्था के सौंदर्य में नये अनुसंधान का ही नाम है ।' इसी तरह उनका कहना है कि 'साहित्यकार से नैतिकता की माँग का यही सम्बंध है कि साहित्यकार जीवन के प्रति संकल्पित हो । नैतिकता को निरा आत्मगत बताना अंतिम विश्लेषण में गलत है । साहित्य का लक्ष्य एक प्रकार के परिष्कृत आनंद की सृष्टि हो सकता है, किंतु साथ ही महान् साहित्यिक प्रयासों के इतिहास का यह अतर्क्य सत्य है कि वह ऐसे सत्य के प्रेषण का साधन रहा है जिसे स्वयं कला से भी अधिक महत्व दिया गया है । इस बात का एहसास ही साहित्यकार को संकल्पित होने के लिये बाध्य करता है ।'

(परिचर्चा : मार्क्सवाद आलोचना/ धरातल- दिसम्बर,78)

– जगदीश गुप्त